अभिलाषी; **अर्थार्थी**=विषय भोग की इच्छा वाला; **ज्ञानी**=तत्त्वज्ञ; **च**=तथा; **भरतर्षभ** =हे भरतवंशशिखामणि (अर्जुन)।

अनुवाद

हे भारत (अर्जुन)! विपदाग्रस्त, धन की इच्छा वाले, जिज्ञासु और ज्ञानी—ये चार प्रकार के पुण्यात्मा मेरी भक्ति करते हैं।।१६।।

तात्पर्य

दुष्टों के विपरीत ऐसे मनुष्य भी हैं, जो शास्त्रीय विधि-विधान का परिपालन करते हैं। ये **सुकृती** कहलाते हैं। धार्मिक, नैतिक एवं सामाजिक विधानों का आज्ञानुसरण करने वाले ये सभी न्यूनाधिक रूप में भगवद्भक्त हैं। इन मनुष्यों की भी चार कोटियाँ हैं—विपदाग्रस्त, धन के अभिलाषी, जिज्ञासु तथा ज्ञानी। ये सब भिन्न-भिन्न कारणों से भगवद्भक्ति करने के लिए भगवान् की शरण में आते हैं। ये शुद्ध भक्त नहीं हैं, क्योंकि इन्हें भक्ति के बदले में कुछ न कुछ अभिलाषा है। शुद्ध भक्ति तो किसी भी अन्य अभिलाषा अथवा कामना से रहित होती है। **भक्तिरसामृत-सिन्धु** में भक्ति की परिभाषा इस प्रकार है:

अन्याभिलाषिताशून्यं ज्ञानकर्माद्यनावृतम्।
आनुकूल्येन कृष्णानुशीलनं भक्तिरुत्तमा।।

'सकाम कर्म अथवा ज्ञान द्वारा किसी सांसारिक लाभ की अभिलाषा से मुक्त होकर अनुकूलतापूर्वक भगवान् श्रीकृष्ण की प्रेमपूर्वक दिव्य सेवा करनी चाहिए। इसी का नाम शुद्ध भक्ति है।'

भक्तियोग के लिए श्रीभगवान् की शरण लेने और शुद्ध भक्त के सत्संग से पूर्णरूप में पवित्र हो जाने पर ये चार प्रकार के सुकृति भी शुद्ध भक्त बन जाते हैं। जहाँ तक दुष्टों का सम्बन्ध है, उनके लिए भक्तियोग के परायण होना अति कठिन है, क्योंकि उनका जीवन स्वार्थमय, असंयमित और पारमार्थिक लक्ष्य से शून्य है। परन्तु उनमें से भी कुछ जब सौभाग्यवश शुद्ध भक्त के संग में आते हैं तो वे भी शुद्ध भक्त बन जाते हैं।

जो सकाम कर्म में ही लगे रहते हैं, वे केवल सांसारिक दुःख के समय भगवान् की शरण में आते हैं और शुद्ध भक्त के संग से भक्योग में लगते हैं। संसार से बिल्कुल निराश व्यक्तियों में से भी कुछ कभी-कभी शुद्धभक्त का सत्संग करने आते हैं और इस प्रकार उनमें भी भगवत्-तत्त्व की जिज्ञासा का उदय हो सकता है। इसी प्रकार, ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में हार जाने पर शुष्क दार्शनिक भगवत्-ज्ञान के लिए उत्कण्ठित होकर भगवद्भक्ति करते हैं और परिणाम में भगवत्कृपा अथवा महाभागवतकृपा से ब्रह्म और परमात्मा के ज्ञान का उल्लंघन करके सविशेष श्रीभगवान् को प्राप्त कर लेते हैं। संक्षेप में, जब ये चारों (आर्त, अर्थार्थी, जिज्ञासु तथा ज्ञानी) सम्पूर्ण वासना से मुक्त हो जाते हैं और यह भलीभाँति हृदयंगम कर लेते हैं